classmate

Date ______
Page 1

B.A. Part - I

Paper - I

Lecture - 40

Dr. Sunita Kumari

Assistant Professor

Marwari College Darbhanga.

TOPIC सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता अथवा उद्देश्य

प्लेटो ने समाज की समृद्धि के लिए नियन्त्रण की आवश्यकता पर बल दिया था जबकि अरस्तू ने नागरिकों की भावनाओं में समानता बनाए रखने के लिए नियन्त्रण को एक प्रमुख आधार माना था वर्तमान युग में भी सभी विचारक यही मानते हैं कि समाज में निरन्तर होने वाले परिवर्तनों के बीच सन्तुलन बनाए रखने के लिए सामाजिक नियन्त्रण का होना सबसे आवश्यक है। सामाजिक नियन्त्रण की आवश्यकता तथा इसके उद्देश्यों को निम्नांकित रूप से स्पष्ट किया जा सकता है —

1. सामाजिक संगठन के स्थायित्व - नियन्त्रण

के कारण व्यक्तियों को मनमाने ढंग से कार्य करने और अपनी इच्छानुसार परिवर्तन करते रहने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। परिणाम स्वरूप सामाजिक जीवन में अनिश्चितता कम हो जाती है और स्थिरता को प्रोत्साहन मिलता है।

2. परम्पराओं की रक्षा – हमारे समाज में जो परम्पराएँ विद्यमान हैं वे दीर्घकाल के अनुभवों पर आधारित हैं इसलिए यह सामाजिक संगठन के लिए उपयोगी होती है। परम्पराओं के टूटने के कारण समाज में न केवल नवीन समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं बल्कि वैयक्तिक व्यवहारों के क्षेत्र में भी एक असमंजस्य स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सामाजिक नियंत्रण के द्वारा परम्परागत व्यवहार करने पर जोर दिया जाता है।

3. समूह में एकता – एकता का अर्थ है सदस्यों के व्यवहारों दृष्टिकोणों और मनोवृत्तियों में समानता। समान नियमों के अन्तर्गत

एकत्र कार्य करने से व्यक्तियों में समान दृष्टिकोण का विकास होता है और इस प्रकार समूह में एकरूपता की स्थापना होती है।

4. सहयोग को प्रोत्साहन — एक संगठित समाज के लिए सदस्यों के पारस्परिक सहयोग का महत्व सबसे अधिक है। यदि व्यक्ति और समूह के व्यवहारों पर नियंत्रण न हो तो वह सदैव संघर्ष के द्वारा अपने स्वार्थों को पूरा करने का प्रयत्न करेगा। इसका परिणाम होगा अनियंत्रित जीवन और समाज का विघटन लेकिन सामाजिक नियंत्रण के कारण प्रत्येक व्यक्ति के सामने सिर्फ एक ही मार्ग रह जाता है कि वह पारस्परिक सहयोग द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।

Sunita Kumari
11/7/20